IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिला प्रधान भारतीय फिल्मों का प्रभाव

डॉ. ललिता परिहार

एसोसिएट प्रोफेसर.

राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय मगरा पूंजला, जोधपुर।

शोध सार

सिनेमा या फिल्म वह है जिसमें कैमरे के सामने किसी विषय को पुरुष एवं महिला कलाकारों द्वारा अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जिसमें नृत्य संगीत का समावेश भी किया जाता है। सिनेमा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम है सिनेमा द्वारा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सभी स्थितियों को आत्मसात करते हुए किसी विषय विशेष पर रचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।सिनेमा जिसमें डॉक्यूमेंट्री फिल्म, टेली फिल्म,फीचर फिल्म,कार्टून फिल्म और विज्ञापन फिल्म आदि का समावेश किया जाता है। सामान्यतः फिल्म किसी भी विषय पर मनोरंजन हेतु प्रस्तुत की जाती है फिल्में समाज की सोच पर भी प्रभाव डालती है। भारतीय सिनेमा में नृत्य,थ्रिलर, दृश्य, प्रेम त्रिकोण, मारधाड़, अपराध,रहस्य, युद्ध,हॉरर,सस्पेंस, सामाजिक प्रताड़ना,सामाजिक समरसता,आर्थिक शोषण, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, राजनीतिक स्थिति, राजनेताओं का चरित्र, देश की स्थिति, महिलाओं की स्थिति आदि विषयों पर बनाई जाती है और वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बनाई फिल्में या सिनेमा समाज की सोच पर प्रभाव डालते हैं। भारतीय सिनेमा में कई महिला प्रधान फिल्में भी बनाई गई है जो महिलाओं से संबंधित विषय जैसे - महिला सशक्तिकरण,बलात्कार, महिलाओ कि उच्च शिक्षा,भेदभाव,जातिवाद,कॉरपोरेट सेक्टर में महिलाएं की स्थिति से संबंधित होती है और यह समाज की सोच को परिवर्तित करती है। प्रस्तुत शोध में भारतीय सिनेमा में महिला प्रधान फिल्म का अध्ययन और महिलाओं पर इनका क्या प्रभाव पड़ता है इसकी जानकारी ली जाएगी। भारतीय सिनेमा में और भी

महिलाओं से संबंधित विषयों को उजागर कर महिला सशक्तिकरण में योगदान देने की आवश्यकता है।

कुंजी शब्द - भारतीय सिनेमा,महिला प्रधान फिल्म,महिला सशक्तिकरण, समाज,राजनीति आदि।

परिचय

7 जुलाई 1896 में मुंबई में लुयुमेरे ब्रदर की फिल्मों द्वारा भारत में सिनेमा उद्योग का प्रारंभ हुआ दो दशक बाद 1913 में दादा साहब फाल्के द्वारा फिल्म राजा हरिश्चंद्र के साथ हिंदी सिनेमा में मूक फिल्म की शुरुआत हुई जिसने व्यावसायिक सफलता प्राप्त की। सन 1931 में आर्देशिक ईरानी ने आलम आरा फिल्म रिलीज की जिससे भारत में ध्वनि सिनेमा की शुरुआत हुई। भारतीय सिनेमा में भारत की स्वतंत्रता के बाद महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। 1940 से 1960 के दशक के बीच को भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग कहा गया है धरती के लालए दो बीघा जमीन आदि कई फिल्में सुपरहिट रही। सत्यजीत रे और विमल राय जैसे फिल्म निर्माताओ ने विभिन्न सामाजिक विषयों पर फिल्में बनाई। उस समय निम्न वर्ग के संघर्ष, दहेज वेश्यावृत्ति, बहु विवाह जैसे सामाजिक विषयों पर फिल्में बनी। 1970 में शोले जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिट हुई तथा भारतीय सिनेमा को बॉलीवुड के नाम से जाना जाने लगा ।1980 में मीरा नायर और अर्पणा सेन जैसी महिला निर्देशकों का उदय हुआ ।1990 में कई फिल्में सुपरहिट रही। 2008 में स्लमडॉग मिलेनियर ने कई अंतरराष्ट्रीय अवार्ड जीते।2008 से 2024 तक वर्तमान में कई अंतरराष्ट्रीय मुद्दों एराष्ट्रीय मुद्दों और सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ व्यावसायिक व नारी प्रधान विषयों पर भी कई सुपरहिट फिल्मों का प्रदर्शन हुआ। सिनेमा किसी भी विचार को प्रस्तुत करने व सोच को प्रभावित करने का सर्वाधिक प्रभावशाली और सशक्त माध्यम है। सिनेमा राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक,आर्थिक और व्यावसायिक स्थितियों को आत्मसात करते हुए विषय को प्रस्तुत करने का एक रचनात्मक माध्यम है।फिल्में व्यावसायिक लाभ के उद्देश्य के साथ-साथ विभिन्न परिवर्तनों के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से भी बनाई जाती है। फिल्मे नृत्य,गीत, प्रेम त्रिकोण, मारधाड़, अपराध रहस्य, प्रेम पारिवारिक स्थितियों, हॉररएक्शन, हास्य,कॉमेडी, साइंसफिक्शन,युद्ध,आर्थिक शोषण जाति भेद, धोखेबाजी, सामाजिक प्रताड़ना सांप्रदायिकता,नक्सलवाद,आतंकवाद,राजनेताओं का चरित्र, पारिवारिक बिखराव, अत्याचार, संस्कृति, धर्म का पालन,आदर्श आदि कई महत्वपूर्ण विषयों पर बनाई जाती है।भारत में कई

महिला प्रधान फिल्में भी बनाई गई है जो कि महिलाओ की स्थिति व सोच को प्रभावित करती हैं महिलाओं से संबंधित फिल्मों द्वारा महिलाओं की सोच के साथ-साथ समाज का महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आता है। सिनेमा मनोरंजन के साथ-साथ समाजिक संदेश देने का भी एक सशक्त माध्यम है। महिलाओ से संबंधित विषयो पर बनी फिल्में समाज को प्रभावित करती है और समाज में परिवर्तन की ओर प्रेरित करती है। फिल्में समाज में उपस्थित अच्छाई और बुराइयों को उजागर भी करती है।

शोध के उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोध में महिला प्रधान फिल्मों का महिलाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

शोध प्राविधि

1. प्रस्तुत शोध में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया जाएगा।

2. प्रस्तुत शोध में 12 महिला प्रधान फिल्म के विषयो की समीक्षा कर महिलाओ से साक्षात्कार कर महिला प्रधान फिल्म का उनके जीवन और सोच पर पड़ने वाले प्रभाव की विवेचना की जाएगी।

भारतीय सिनेमा की वर्तमान मे महिला प्रधान फिल्में ....

भारतीय सिनेमा में महिलाओं से संबद्ध विषयों पर कई फिल्में बनाई गई है जो महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ सामाजिक महत्व के विषयों पर भी ध्यान केंद्रित करती है । विभिन्न महिला प्रधान विषयों पर आधारित निम्न फिल्में हर महिला को आत्मविश्वास के साथ-साथ आत्मनिर्भर बनने की भी प्रेरणा देती है और महिलाओं की सोच को प्रभावित करती है।

1 इंग्लिश विंग्लिश - इस फिल्म में एक मां अपनी बेटी के लिए 45 वर्ष की उम्र में इंग्लिश भाषा को सीखती है क्योंकि उसकी बेटी एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ती है और पेरेंट्स टीचर मीटिंग में मां को इंग्लिश भाषा नही आने के कारण बेटी को शर्मिंदगी महसूस होती है। इस फिल्म में बहुत ही आसान और असरदार तरीके से एक हाउसवाइफ सबको सम्मान मिलने की बात भी कहती है। इस फिल्म से महिलाओ को यह संदेश मिलता है की इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए। इस फिल्म

में एक मां अपने एडवांस बच्चों से थोड़ा पीछे जाती है लेकिन इंग्लिश भाषा सीख कर वह अपनी इस अड़चन को पार कर देती है।

2. हाईवें - इस फिल्म में धनी परिवार के बेटी के साथ उसी के रिश्तेदार द्वारा की जाने वाली अश्लील हरकत को छुपाने का प्रयास किया जाता है और बच्ची को अपने साथ हुए व्यवहार को किसी को भी नहीं बताने के लिए चुप कराया जाता हैं। इसमें बेटियों के लिए यह संदेश दिया गया है कि उन्हें बचपन से ही गुड टच व बेड टच की जानकारी दी जानी चाहिए और यदि बच्ची अपने साथ हुए किसी गलत कार्य के लिए अपने माता.पिता को कुछ कहती है तो माता-पिता को भी उसकी बात को सुनकर उस बच्ची के साथ किए गए गलत व्यवहार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

3 पिंक - इस फिल्म में दिल्ली में रहने वाली तीन कामकाजी लड़किया रात में विभिन्न पार्टियों में जाती है की कहानी को बताया गया है।इस फिल्म में यह संदेश दिया गया है कि "ईफ ए गर्ल से नो ईट मिंस नो" चाहे वह आपकी गर्लफ्रेंड हो आपकी पत्नी हो या फिर अपनी शरीर से कमाई करने वाली हो। इस फिल्म में यह बताया गया है कि औरत की अपनी एक सोच है और उसकी एक स्वतंत्रता है। उसके साथ जबरदस्ती नही की जा सकती हैं।

4क्वीन - इस फिल्म की कहानी एक ऐसी लड़की की है जिसके घरेलू और संस्कारी होने के कारण उसका मंगेतर शादी होने के ठीक पहले शादी तोड़ देता है।ऐसे में लड़की की भावनाएं, शादी टूटने का परिवार पर प्रभाव बताया गया है वह विदेश जाकर वहां से खुद को इस काबिल बनाती है कि वह अपनी पसंद के लड़के से शादी कर सकती है।

5 थप्पड़ - यह फिल्म एक शादीशुदा महिला की कहानी है जिसमें उसके पति द्वारा उसके माता-पिता और दोस्तों और रिश्तेदारों के सामने थप्पड़ मारा जाता है। एक थप्पड़ से उस महिला की जिन्दगी बदल जाती है और वह आत्मनिर्भर बनती है। शादी का मतलब यह नहीं है कि पति उसका मालिक है यह फिल्म एक महिला को अपने पति माता-पिता दोस्त और पूरे समाज के खिलाफ अपनी गरिमा के लिए खड़ा होने की हिम्मत देती है। यह फिल्म महिला सम्मान और पुरुषवादी सोच को स्पष्ट बताती है।

6 मॉम - इस फिल्म में एक मां की ताकत को बताया गया है यह एक ऐसी महिला की कहानी है जिसमें वह अपनी बेटी का बलात्कार करने वाले को कानून या कोर्ट से बरी करने पर अपनी बेटी को इंसाफ दिलाने के लिए खुद बदला लेती है ।हमारे कानून में कहीं कमियां

है जिसका फायदा उठाकर अपराधी सजा से बच जाते हैं यह फिल्म हर मां को किसी भी बेटी के साथ हुए अन्याय की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

7 कहानी - यह एक सस्पेंस और थ्रिलर से भरी फिल्म है जिसमें महिला गर्भवती होकर बड़ी ही हिम्मत और समझदारी से अपने पति की मौत का बदला लेती है व अपने पति के अधूरे कार्य को भी पूरा करती है अंत में पता चलता है कि महिला गर्भवती नहीं है। इस फिल्म में एक सशक्त महिला द्वारा विभिन्न अव्यवस्थायो को उजागर किया जाता है।

8. नीरजा - यह फिल्म नीरजा भनोट की असली कहानी पर आधारित है जोकि एयर होस्टेस होती है और हवाई जहाज में ईंधन खत्म होने पर सभी बच्चों और यात्रियों की जान बचाते हुए खुद शहीद हो जाती है और उसके व्यक्तिगत जीवन के उतार चढ़ाव को भी इस फिल्म में बताया गया है। यह फिल्म निस्वार्थ भाव से कार्य करने की प्रेरणा देती है।

9. मेरीकॉम - यह एक मणिपुरी मुक्केबाज मैरीकॉम की खेल जीवनी पर आधारित फिल्म है। इसमें उसके मुक्केबाज बनने से लेकर विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में जीत के सफर को दिखाया गया है वह बचपन से बॉक्सर बनाना चाहती थी। वह वर्ल्ड चैंपियन बॉक्सर के कोच से ट्रेनिंग लेकर गोल्ड मेडलिस्ट चैंपियन बनती है उसके बाद शादी कर लेती है और शादी के बाद दो बच्चों की माँ बनने के बाद अपने पति की मदद से वापस बॉक्सिंग कैरियर शुरू करती है। इस फिल्म से यह प्रेरणा मिलती है कि विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए एक महिला अपने सपनों को पूरा कर सकती है।

10. पाचर्ड - यह फिल्म गांव में रहने वाली तीन महिलाओं की कहानी है जिसमें एक विधवा महिला है, एक पत्नी है जो अपने पति में कमी की वजह से मां नहीं बन सकती है। यह फिल्म बाल विवाह, पुरुष प्रधानता, घरेलू हिंसा, मैरिटल रेप, दहेज प्रथा जैसे मुद्दों को आकर्षित करती है।यह फिल्म हमारे समाज को प्रभावित करती है की शहरों में हम महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित कर रहे हैं लेकिन हमारे ही देश के दूर दराज के इलाकों और गांव में महिलाओं की वास्तविक स्थिति कैसी है । यह फिल्म महिलाओं को स्वयं फैसले लेने के लिए प्रेरित करती है

11. गुंजन सक्सेना - यह फिल्म गुंजन सक्सेना के वास्तविक जीवन की कहानी है जो की एक मिडिल क्लास परिवार से होते हुए सेना में पायलट बनने के सपने को किस प्रकार से पूरा करती हैऔर कड़ी मेहनत से सफल होती है। इस फिल्म में बताया गया है कि एक

महिला पायलट कारगिल युद्ध में दुश्मनों के छक्के छुड़ाती है । यह फिल्म महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करती है।

12 सत्ता - यह फिल्म एक साधारण लड़की की कहानी है जो नौकरी की तलाश में दिल्ली से मुंबई आती है।वह एक राजनीतिक युवा नेता से शादी कर लेती है शादी के बाद उसके जीवन में ऐसी परिस्थितियों आती है कि उसे सक्रिय राजनीति में प्रवेश करना पड़ता है।वह राजनीति में आने वाली विकट परिस्थितियों का सामना करती है और सिस्टम से भीड़ जाती है। यह फिल्म एक उच्च मध्यम वर्गीय पेशावर महिला की राजनीतिक प्रगति को दर्शाती है।यह फिल्म राजनीति में अंडरवर्ल्ड से लेकर बिजनेसमैन और भ्रष्ट पुलिस कर्मियों की सहभागिता को दर्शाती है।यह फिल्म महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करती है।

निष्कर्ष

भारतीय फिल्में समाज का आईना होती है फिल्में मनोरंजन के साथ.साथ समाज की दिशा व दशा को भी प्रभावित करती है भारतीय सिनेमा नारी की वर्तमान स्थिति तथा समाज में पनप रही विभिन्न बुराइयों पर अपने माध्यम से कड़ा प्रहार करता है सिनेमा दुखी व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाने का भी कार्य करता है। सिनेमा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव ग्रहण करते हुए समय-समय पर टिप्पणी भी करता है सिनेमा महिला प्रधान फिल्मों के द्वारा महिलाओं के दर्द को अभिव्यक्त करता है और सिनेमा से प्रेरणा लेकर लोगों ने व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन भी किए हैं। भारतीय सिनेमा महिलाओं से जुड़े विषय पर फिल्म बनाकर महिला सशक्तिकरण में अपना प्रभावपूर्ण योगदान दे रहा है।

संदर्भ सूची -

1. भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा डॉ देवेंद्र नाथ सिंह डॉ वीरेंद्र सिंह यादव
2. सिनेमा अभिव्यक्ति का नहीं अन्वेषण का माध्यम है फिल्मकार कमाल स्वरूप ;हंस हिंदी सिनेमा के 100 साल फरवरी 2019द्ध
3. नेटफ्लिक्स
4. अमेजन प्राइम टाइम
5. डॉ. करिश्मा परिहार,सुश्री जया भाटी, डॉ. संजू सोलंकी, श्रीमती सुनीता देवड़ा, डॉ. विनीता टाक ।
6. गूगल.कॉम